Gerbner's model (1964)

जॉर्ज गर्बनर का 1964 का संचार प्रतिरूप

Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MJMC
Sem-1, Paper- 101
Date- 02/07/2021

Gerbner's model 1964

- अमेरिकन संचारशास्त्री जार्ज गर्बनर ने अपने प्रथम प्रतिरूप को वर्ष 1956 में प्रस्तुत किए थे। इन्होंने प्रथम प्रतिरूप को विकसित करके अपने दूसरे प्रतिरूप को वर्ष 1964 में एक नए रूप में प्रस्तुत किए।
- दूसरे प्रतिरूप में इन्होंने बताया कि M ने E को E1 के बतौर अवबोधन करके SE के रूप में दूसरों तक भेजा। और दूसरा अर्थात् M2 उस संदेश को यानि SE को SE1 के रूप में अवबोधन करेगा।

Gerbner's model 1964

- यह प्रक्रिया उसी अनुसार चलेगी जैसे M के साथ चली थी। अर्थात M2 अपनी चयन प्रक्रिया, परिप्रेक्ष्य और उपलब्ध साधनों के आधार पर SE को अवबोधित SE1 के रूप में करेगा।
- इस प्रकार यह प्रतिरूप अथवा मॉडल अवबोधित–रचना–अवबोधन की श्रृंखला पर आधारित है। इसे मॉडल को हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं।
- वातावरण में नमी को देखकर M को लगता है कि वर्षा हो रही है। वह अपना संदेश इसी रूप में भेजता है। M2 के पास जो संदेश पहुंचता है वह वास्तविकता से भिन्न अथवा अलग है। और संभव है कि M2 भी इस संदेश का अवबोधन अलग रूप में करें।

Gerbner's model 1964

- जॉर्ज गर्बनर के प्रतिरूप के अनुसार, मौखिक संचार की प्रक्रिया आत्मगत (Subjectively) होती है।
- अपने प्रतिरूप के द्वार गर्बनर इस प्रश्न को उठाते हैं कि मास मीडिया के द्वारा किसी घटना के सम्बंध में जो जानकारी दी जाती है और उसे ग्रहीता जिस रूप में ग्रहण करता है, यह दोनों चीजें वास्तविकता से कितना मेल खाती है।

Gerbner's model 1964

- E अथवा घटना को M यानी माध्यम E1 के रूप में अवबोधित करता है और SE के रूप में श्रोता तक पहुंचाता है। यहां पुनः श्रोता यानी M2 उस SE को SE1 के रूप में ग्रहण करता है। इस प्रकार जो मूल चीज E थी जो E1 और SE बनने के बाद श्रोता तक SE1 के रूप में पहुंचती है।
- गर्बनर के 1964 के प्रतिरूप को हम आगे रेखाचित्र के माध्यम से समझ सकते हैं।

Gerbner Model of 1964